महिला किसान के सफलता की कहानी

मेहनत किसी का मोहताज नहीं होता है वह काजल गोराई (पति – माथुर गोराई) ग्राम बांगुरदा, पंचायत बांगुरदा, प्रखंड पटमदा । प0 बंगाल से व्याह हो कर बांगुरदा ग्राम में 2004 में आई । उसकी पढ़ाई सिर्फ पाँचवी तक ही है । पति जमशेदपुर से बंगाल तक चलने वाली बस में कंडक्टर का काम करता था । रोजी रोटी दैनिक मजदुरी से ही चलता था । किसी तरह घर का खर्च चल रहा था । परिवार में संख्या भी बढ़ रहा था । काजल गोराई अपने पति से सलाह कर के लीज पर ग्राम में 2 एकड़ जमीन लिया । चूंकि पति दैनिक मजदुरी के लिए चले जाते थे इस स्थिति में खेत का काम काजल को ही देखना पड़ता था । खरीफ मौसम में काजल गोराई धान की खेती करती थी । रबी मौसम में घर में खाने लायक सब्जी उगा लेती थी । लेकिन इससे वह संतुष्ट नहीं थी क्योंकि अपने बच्चों की पढ़ाई एवं अन्य खर्च पुरा हीं कर पा रही थी । बांगुरदा ग्राम में सिमंत सेन मोदक किसान मित्र है जो कि आत्मा एवं अन्य विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की चर्चा गाँव के बैठकों में किया करता था । काजल भी उसके सम्पर्क में आई । उसने भी खेती की नई तकनीक की चर्चा सुन रखी थी कि नये तरीके से खेती करने पर फसल का उत्पादन बढ़ता है । उसमें जानने की इच्छा जागी । श्री विधि से धान खेती की योजना चल रही थी । काजल गोराई को भी आत्मा के द्वारा प्रशिक्षण के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र भेजा गया । पहली बार काज्ल के द्वारा श्री विधि से धान का खेती किया गया । जब वह एक – एक विचड़ा खेत पर लगा रही थी उस समय आस पास के किसानों ने उसका मजाक उड़ाया कि क्या एक – एक विचड़ा से धान होगा । उसे भी शक होने लगा कहीं धान का बीज बर्बाद तो नहीं कर रही है । किसान मित्र एवं अन्य प्रसार कर्मी द्वारा हौसला बढ़ाया । इस दौरान पटमदा में ही अन्य किसान जो श्री विधि से धान की खेती करते आ रहे थे फसल देखने का मौका मिला । उसकी हिम्मत बढ़ी । दिनों दिन फसल में कल्ले आने लगे । प्रशिक्षण में बताएँ गए तकनीक के अनुसार उसने भी कोनोविडर चलाया । उसने कुल पंद्रह दिन के अंतराल पर दो बार कोनोविडर

चलाया । फसल में बढोतरी देखकर वह खुश हुई । उसे धान का अच्छा उत्पादन भी प्राप्त हुआ । इस दौरान उसे राँची में सब्जी खेती का प्रशिक्षण के लिए भेजा गया । प्रशिक्षण के उपरांत उसने सब्जी की खेती भी किया । मुख्यतः टमाटर, बैंगन एवं मूली की सब्जी उसने लगाया । साथ – साथ गाँव में महिलाओं का समूह **माँ चंडी महिला समिति** का गठन किया जिसका संचालन काजल गोराई के द्वारा किया जाता है । वह बहुत खुश है । बच्चों की अच्छी शिक्षा दे रही है । उसे ऐसा लगता है कि अपने तो पढ़ाई नहीं कर पाई परंतू अपने बच्चों की शिक्षा पर कोई कमी नहीं हो ।